

सबद पुं. (पं.) 1. शब्द, आवाज 2. किसी संत, महात्मा की वाणी, भजन, उपदेश आदि जैसे-शब्द कीर्तन।

सबदी पुं. (पं.) 1. शब्द 2. संतों के गीत, भजन, वाणी आदि टि. किसी महात्मा की वाणी पर विश्वास रखने वाला या उनकी आज्ञा का पालन करने वाला।

सबब पुं. (अर.) 1. हेतु, कारण, वजह 2. किसी प्रकार की क्रिया होने का साधन, द्वार।

सबरा सर्व. (देश.) 1. सब 2. बरतन में जोड़ लगाने का औजार।

सबरी स्त्री. (देश.) शबर जाति की स्त्री, शबरी, भीलनी।

सबल वि. (तत्.) 1. जिसमें अधिक बल हो, बलयुक्त 2. बलवान, शक्तिशाली 3. जिसकी सेना के सैनिक बलवान हों।

सबा स्त्री. (अर.) 1. मार्ग, रास्ता 2. पुरवाई हवा जो पूरब से पश्चिम की ओर बहती है।

सबात स्त्री. (अर.) 1. स्थिरता 2. दृढ़ता, मजबूती।

सबाध वि. (तत्.) बाधासहित, विघ्नमय रुकावट युक्त जैसे- सबाध दौड़।

सबील स्त्री. (अर.) 1. मार्ग, रास्ता 2. उपाय, तरबीर 3. धर्मार्थ पानी पिलाने का स्थान।

सबीह स्त्री. (देश.) आकृति, तस्वीर, चित्र।

सबू पुं. (फा.) 1. मिट्टी से बना पात्र, घड़ा, मटका 2. शराब रखने का पात्र।

सबूत पुं. (फा.) वह वस्तु या कोई बात जिससे किसी तथ्य की प्रामाणिकता सिद्ध होती हो, प्रमाण, सबूत।

सबून पुं. (देश.) नहाने या वस्त्र धोने का साबुन।

सबूर पुं. (अर.) 1. विपत्ति में या असमर्थता की स्थिति में धीरज/धैर्य रखना, सब्र 2. संतोष।

सबूरा पुं. (अर.) काष्ठ, कपड़े, चमड़े आदि का सीमित व सुंदर आकार में बना हुआ एक लंबा

उपकरण जिससे कुआँरी, विधवा या पतिहीना स्त्रियाँ अपनी कामवासना तृप्त करती हैं।

सबूरी स्त्री. (अर.) संतोष।

सबेरा पुं. (देश.) प्रभात, सुबह।

सब्ज वि. (फा.) 1. हरित, हरा-भरा 2. कच्चा और ताजा (फल-फूल आदि) 3. भला, शुभ मुहा. सब्ज होना- हरा भरा होना।

सब्ज कदम वि. (फा.+अर.) जिसके कहीं पहुँचने पर कोई अशुभ हो जाए अथवा जिसके चरण अशुभ हों, उपहास और व्यंग्य।

सब्जबाग पुं. (फा.) 1. हरा भरा बगीचा 2. मृग मरीचिका 3. भविष्य के लिए झूठी मधुर आशाएँ मुहा. सब्जबाग दिखाना- अपना काम सिद्ध करने के लिए या किसी को अपने जाल में फँसाने के लिए उसे भविष्य के संबंध में स्वर्णिम आशाएँ दिखाना।

सब्जा पुं. (फा.) 1. हरी घास 2. वनस्पति 3. हरियाली।

सब्जी स्त्री. (फा.) 1. सब्ज होने का भाव या अवस्था 2. हरी भाजी, शाक, हरी तरकारी जैसे-पालक, सरसों, चने का साग, लौकी, तोरी आदि 3. पकाई हुई तरकारी।

सब्बल पुं. (फा.) जमीन में गड़ढा खोदने का एक लोहे का उपकरण।

सब्र पुं. (अर.) 1. धैर्य (सफलता के लिए), मुसीबत में धीरज 2. शक्तिहीन, पीड़ित या असहाय द्वारा रखा जाने वाला धैर्य 3. संतोष।

सब्रह्मचारी पुं. (तत्.) वे ब्रह्मचारी जिन्होंने एक साथ रहते हुए एक ही गुरु से अध्ययन किया हो।

सभंग वि. (तत्.) जिसके खंड या टुकड़े हुए हों, भग्न, टूटा हुआ।

सभंग श्लेष पुं. (तत्.) श्लेष अलंकारों के दो भेदों में से एक जब किसी शब्द या पद का भंग या खंड करके कोई दूसरा अर्थ निकाला जाता है